जौ पसु हौं तो कहा बस मेरो चरौं नित नंद की धेनु मँझारन।।

पाहन हौं तो वही गिरि को जो कियो हरिछत्र पुरंदर धारन।

जौ खग हौं तो बसेरो करौं मिलि कालिंदी कूल कदंब की डारन।।

शब्दार्थ–मानुष-मनुष्य। **बसौं**-बसना, रहना। **ग्वारन**-ग्वालों के मध्य। **कहा बस**-वश में रहना। **चरों**-चरता रहूँ। **नित**-हमेशा । **धेनु**-गाय । **मँझारन**-बीच में। **पाहन**-पत्थर । **गिरि**-पर्वत । **छत्र**-छाता । **पुरंदर**-इंद्र । **धारन**-धारण किया। **खग**-पक्षी। **बसेरो**-निवास करना । **कालिंदी**-यमुना। **कूल**-किनारा । **कदंब**-एक वृक्ष । **डारन**-शाखाएँ, डालें।

Edit with WPS Office

भावार्थ-कृष्ण की लीला भूमि ब्रज के प्रति अपना लगाव प्रकट करते हुए कवि कहता है कि अगले जन्म में यदि मैं मनुष्य बनूँ तो गोकुल गाँव के ग्वाल बालों के बीच ही निवास करूँ। यदि मैं पशु बनूँ तो इसमें मेरा कोई जोर (वश) नहीं है फिर भी मैं नंद बाबा की गायों के बीच चरना चाहता हूँ। यदि मैं पत्थर बनूँ तो उसी गोवर्धन पर्वत का पत्थर बनना चाहता हूँ, जिसे कृष्ण ने अपनी उँगली पर उठाकर लोगों को इंद्र के प्रकोप से बचाया था। यदि मैं पक्षी बन जाऊँ तो में उसी कदंब के पेड़ पर एक आश्रय बनाऊंगा जो यमुना के तट पर है और जिसके नीचे श्रीकृष्ण रास रचाया करते थे।

Edit with WPS Office

या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूँ पुर को तजि डारौं।
आठहुँ सिद्धि नवौ निधि के सुख नंद की गाइ चराइ बिसारौं॥
रसखान कबौं इन आँखिन सौं, ब्रज के बन बाग तड़ाग निहारौं।
कोटिक ए कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर

शब्दार्थ- **या**–इस। **लकुटी**-लाठी। **कामरिया**-छोटा कंबल। **तिहूँ**-तीनों। **पुर**-नगर, लोक। **तजि डारौं**-छोड़ दूँ। **नवौ निधि**-नौ निधियाँ । **बिसारौं**-भूलूँ। **कबौं**-जब से। सौं-से। **तड़ाग**-तालाब। **निहारौं**-देखता हूँ। **कोटिक**-करोड़ों। **कलधौत**-सोना। **धाम**-भवन। **करील**-एक प्रकार का वृक्ष ।

Edit with WPS Office

भावार्थ– कृष्ण से जुड़ी वस्तुओं के प्रति अपना प्रेम प्रकट करते हुए कवि कहता है कि जिस लाठी और कंबल को लेकर कृष्ण गाय चराया करते थे उसके बदले में तीनों लोकों का सुख त्यागने को तैयार हूँ। मैं नंद की गायों को चराने के बदले आठों सिद्धियों और नौ निधियों का सुख भी भूल सकता हूँ। मैं ब्रजभूमि पर स्थित बागों, वनों, तालाबों को देखते रहना चाहता हूँ। मैं इन करील के कुंजों में रहने के बदले हजारों सोने के महलों का सुख त्यागने को तैयार हूँ।

3

Edit with WPS Office

अर्थ

शेष यानी शेषनाग, महेश यानी भगवान् शिवजी, दिनेश यानी सूर्यदेव, सुरेश यानी इंद्रदेव यह सब देवता गण जिसकी पूजा करते हैं जिसको अनादि यानी जिसका उद्भव ना अंत पता है, जिसके खंड नही किए जा सकते हैं जिस में छेद ना किए जा सकते हो, भेदना संभव नहीं है ऐसा वेद बताते हैं ।नारद शुक व्यास जैसे ऋषि मुनि इनके बारे में जानने का प्रयत्न करते हैं पर हार जाते हैं । ऐसे श्री कृष्ण जी को अहीरों की लड़कियां थोड़ा-थोड़ा मक्खन दिखाकर नाचने को कहती हैं वह नाचते

Edit with WPS Office